



शेखे तरीक़त अमीरे अहले सुन्नत हज़रत इल्लामा मौलाना अबु क़िसात
मुहम्मद इल्य़ास अज़ार कादिरि रज़वी رحمۃ اللہ علیہ

नेक बनने का नुस्खा

रिसाला नम्बर 1

(तख़ीज़ शूबा)

इस रिसाले में....

क़द्आवर सांप

बेटे की मौत पर मुस्कराहट

नमाज़ में हज़ का सवाब

म-दनी काम बढ़ाने का नुस्खा

अमल करने वालों की तीन अक्स्माय

वगैरा मुला-हज़ा फ़रमाइये ।

मक़त-बदरुज मदीना

फ़िलोस्टेड इल, अलीगढ़ की बाँध के सामने, तीन राबक़ अमूदआबाद-1. नुक्कत, इन्डिया
Ph:91-79-26261168 E-mail: maktabahed@gmail.com
www.darululoom.net



الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ ط
 أَمَا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ط بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ط
नेक बनने का नुस्खा¹

गालिबन आप को शैतान यह रिसाला नहीं पढने देगा मग कोशिश कर के पूरा पढ कर शैतान के वार को नाकाम बना दीजिये ।

दुरूद शरीफ की फज़ीलत

एक शख्स ने ख्वाब में खौफनाक बला देखी, घबराकर पूछा तू कौन है ? बला ने जवाब दिया, मैं तेरे बुरे आ'माल हूं। पूछा, तुझ से नजात की क्या सूरत है ? जवाब मिला, दुरूद शरीफ की कसरत ।

(अल कौलुल बदीअ, स-फहा:113, तब्आ दारुल कुतुबुल इल्मिया, बैरूत)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस वाकिए से मा'लूम हुवा के दुरूद शरीफ की कसरत भी **नेक बनने का नुस्खा है** । ऐ काश ! हम उठते बैठते चलते फिरते हर वक्त दुरूदो सलाम पढते रहें ।

तुर्बत में होगी दीद रसूले अनाम ﷺ की
 आदत बना रहा हूं दुरूदो सलाम की
कद आवर सांप

हज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ النَّبِيِّ से किसी ने उन की तौबा का सबब पूछा, तो फरमाया, मैं महकमे पोलीस में सिपाही था गुनाहों का आदी और पक्का शराबी था । मेरी एक ही बच्ची थी, इस से मुझे बेहद प्यार था । वोह दो² साल की उम में फौत हो गई, मैं गम से निढाल हो गया । इसी साल जब शबे बराअत आई, मैं ने नमाझे इशा तक न पढी, खूब शराब पी और नशे ही में मुझे नींद ने घेर लिया । मैं ख्वाब की दुन्या में पहुँच गया । क्या देखता हूं के महशर बरपा है, मुदेर् अपनी अपनी कबों से उठ कर जम्अ हो रहे हैं, इतने में मुझे अपने पीछे सर सराहट महसूस हुई, पीछे मुड कर जो देखा तो एक कद आवर सांप मुंह खोले मुझ पर हम्लाआवर होने वाला था । मैं घबरा कर भाग खडा हुवा, सांप भी मेरे पीछे पीछे दौडने लगा । इतने में एक नूरानी चेहरे वाले **कमझोर बुझुर्ग** पर मेरी नज़र पडी मैं ने उन से **मअस्सलाम** फरियाद की, 'उन्हों ने फरमाया, मैं बेहद कमझोर हूं आप की मदद नहीं कर सकता ।' मैं फिर तेज़ी के साथ भागने लगा, सांप भी बराबर तआकुब में था, दौडता दौडता मैं एक टीले पर चढ गया, टीले के उस तरफ खौफनाक आग शो'लाज़न थी और काफी लोग उस में जल रहे थे, मैं उस में गिरने वाला ही था के आवाज़ आई, 'पीछे हट जा तू इस आग के लिये नहीं है ।' मैं ने अपने आप को संभाला दिया और पलट कर दौडने लगा और सांप भी पीछे पीछे था । वोही **कमझोर बुझुर्ग** मुझे फिर मिल गए और रो कर फरमाने लगे, 'अफसोस ! मैं बहोत ही कमझोर हूं, आप की मदद नहीं कर सकता, वोह देखिये सामने जो गोल पहाड है वहां मुसल्मानों की अमानतें हैं, वहां तशरीफ ले जाइये, अगर आप की भी वहां कोई अमानत हुई तो **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** रिहाई की कोई सूरत निकल आएगी ।' मैं गोल पहाड पर पहुँचा, वहां दरीचे बने हुए थे, उन दरीचों पर रेशमी पर्दे लटक रहे थे, दरवाज़े **सोने** के थे और उन में **मोती** जडे हुए थे । फिरिश्ते ए'लान फरमाने लगे, 'पदेर् हटा दो' दरवाज़े खोल दो, शायद इस परेशान हाल की कोई अमानत यहां मौजूद हो, जो उसे सांप से बचा ले ।' दरीचे खुल गए और बहोत सारे म-दनी मन्ने चांद से चेहरे चमकाते झांकने लगे, उन ही में मेरी फौत शुदा दो² साला म-दनी मन्नी भी थी । मुजे देख कर वोह रो रो कर चिल्लाने लगी, 'खुदा की कसम ! यह

1. यह बयान अमीरे अहले सुन्नत **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ** ने तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक, दा'वते इस्लामी के तीन रोज़ा इज्तिमाअ (2,3,4 र-जबुल मुरज्जब सिने 1419 हिजरी मदीनतुल औलिया मुल्तान) में फरमाया । ज़रूरी तरमीम के साथ तहरीरन हाज़िरे खिदमत है । -**उबैद रज़ा इब्ने अत्तार**

तो मेरे अब्बा जान हैं ।' फिर झोरदार छलांग लगा कर वोह मेरे पास आ पहोंची और अपने बाएं हाथ से मेरा दायां हाथ थाम लिया । येह देख कर वोह **कदआवर सांप** पलट कर भाग खडा हुवा, अब मेरी जान में जान आई । मेरी म-दनी मन्नी मेरी गोद में बैठ गई और सीधे हाथ से मेरी दाढी सहलाते हुए उस ने पारह 27 सूरतुल हदीद की 16 वीं आयत का येह जुझ तिलावत किया,

الْمَيَانِ لِلَّذِينَ آمَنُوا أَنْ تَخْشَعَ قُلُوبُهُمْ لِذِكْرِ اللَّهِ وَمَا نَزَلَ مِنَ الْحَقِّ **तर्जमए कङ्गुल ईमान:** क्या ईमान वालों को अभी वोह वक्त न आया के उन के दिल झुक जाएं अल्लाह की याद और उस हक (या'नी कुरआने पाक) के लिये जो उतरा ।

अपनी म-दनी मुन्नी से येह आयते करीमा सुन कर मैं रो पडा । मैं ने पूछा, बेटी वोह कदआवर सांप क्या बला थी ? कहा, 'वोह आप के बुरे आ'माल थे जिन को आप बढ़ाते ही चले जा रहे हैं । **कद आवर सांप** नुमा बद आ'मालियां आप को जहन्नम में पहोंचाने के दर पै हैं ।' पूछा, वोह **कमझोर बुझुर्ग** कौन थे ? कहा, 'वोह आप की नेकियां थीं चूँके आप नेक अमल बहोत कम करते हैं लिहाझा वोह बेहद कमजोर हैं और आप की बुराइयों का मुकाबला करने से कासिर ।' मैं ने पूछा, तुम यहां पहाड पर क्या करती हो ? कहा, 'मुसल्मानों के फौत शुदा बच्चे यहीं मुकीम हो कर कियामत का इन्तिज़ार करते हैं, हमें अपने वालिदैन का इन्तिज़ार है के वोह आएँ तो हम उन की शफाअत करें ।' फिर मेरी आंख खुल गई, मैं इस ख्वाब से सहम गया था, **الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ** मैं ने अपने तमाम गुनाहों से रो रो कर तौबा की ।

(रौझुरियाहीन, स-पहा:91, अल मत्वअतुल मैमनिय्या, मिरु)

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस हिकायत में हमारे लिये इबत के लिये बे शुमार म-दनी फूल हैं, जिन में एक म-दनी फूल येह भी है के जिस का ना बालिग बच्चा फौत हो जाता है वोह नुक्सान में नहीं बल्के फाइदे में रहता है । जैसा के सय्यिदुना मालिक बिन दीनार **عَلَيْهِ رَحْمَةُ النَّارِ** की फौत शुदा म-दनी मुन्नी ख्वाब में उन की हिदायत का बाइस बनी और शराब नोशी और गुनाहों की कसरत वाले को उठा कर आस्माने विलायत का दरख्खान्दा सितारा बना दिया ! इस हिकायत में दिल पर चोट लगाने वाली जिस आयते कुरआनी का तझकिरा है । **खझाइनुल इरफान** में इस का शाने नुझूल येह है, 'उम्मुल मुअ्मिनीन सय्यिदतुना आइशा सिद्दीका **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا** से मरवी है, नबिय्ये करीम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** दौलत सराए अकदस से बाहर तश्रीफ लाए तो मुसल्मानों को देखा के आपस में **हंस** रहे हैं । फरमाया, तुम हंस रहे हो ! अभी तक तुम्हारे रब **عَزَّوَجَلَّ** की तरफ से अमान नहीं आई और तुम्हारे हंसने पर येह आयत नाझिल हुई । उन्होंने ने अर्झ किया, या रसूलल्लाह ! **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** इस हंसी का कप्फारा क्या है ? फरमाया, 'उतना ही **रोना** ।'

(तफ्सीरे खझाइनुल इरफान, पारह:27, अल हदीद, झेरे आयत:16)

**नदामत से गुनाहों का इझाला कुछ तो हो जाता
हमें रोना भी तो आता नहीं हाए नदामत से
बांसरी से आयत की आवाझ गूंज उठी**

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाकेई येह आयते करीमा नेक बनने का बेहतरीन म-दनी नुस्खा है । इस आयते मुबारका को सुन कर न जाने कितनों की झिन्दगियों में म-दनी इन्किलाब आ गया । हझरते सय्यिदुना **अब्दुल्लाह बिन मुबारक** **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** फरमाते है, मेरा उनफुवाने शबाब था, अपने दोस्तों के हमराह सैरो तफ्रीह करते हुए एक बाग में पहोंचा, मुजे बांसरी बजाने का बहोत शौक था, रात जूं ही बांसरी बजाने के लिये उठाई, बांसरी में से आयते करीमा **الْمَيَانِ لِلَّذِينَ** अलख गूंज उठी ! मेरा दिल चोट खा गया, मैं ने बांसरी को झमीन पर दे मारा और गुनाहों से सच्चे दिल से तौबा की और अहद किया के कोई ऐसा काम

हरगिझ नहीं करूंगा जो मुझे अपने रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह से दूर कर दे ।

(शुउबुल ईमान, रकमुल हदीस:7317, जिल्द:5, स-फहा:68, दारुल कुतुबुल इल्मिया, बैरूत)

हिकायत : देखा आप ने ! येह आयते करीमा हझरते सय्यिदुना **अब्दुल्लाह बिन मुबारक** رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की हिदायत का झरीआ बन गई और आप विलायत के बहोत बडे मन्सब पर फाइझ हो गए । एक बार आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ कहीं तश्रीफ लिये जा रहे थे के एक नाबीना मिला, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने फरमाया, कहो क्या हाजत है ? उस ने अर्झ की, आंखें दरकार हैं । आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने उसी वक्त दुआ के लिये हाथ उठा दिये, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस नाबीना की आंखों को रौशन कर दिया ।

(तझकिरतुल औलिया, जिल्द:1, स-फहा:167, इन्तिशाराते गंजीना, तेहरान)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

हिकायत : हझरते सय्यिदुना इस्माईल हक्की رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फरमाते हैं, “**सय्यिदुना फुझैल बिन इयाझ** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के नेक बन्दे बनने का सबब भी येही आयत बनी । आप अपने दौर के मशहूर डाकू थे । किसी औरत के इश्क में गरिफ्तार हो गए, वोह भी बदकारी के लिये आमादा हो गई, जब मुकर्ररा वक्त पर तश्रीफ ले गए तो कहीं से इसी आयत **أَلَمْ يَأْنِ لِلَّذِينَ** (अलख) की तिलावत की आवाज आ रही थी, दिल की दुन्या झेरो झबर हो गई, रोते हुए पलटे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से गिडगिडा कर अपने गुनाहों की मुआफी मांगी । नेकियों में दिल लगाया । मक्कए मुकर्रमा में अरसए दराझ तक इबादत की और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मक्बूल औलिया में शामिल हुए ।

(रूहुल बयान, जिल्द:9, स-फहा:365, तब्आ दारे एह्याउत्तुरासिल अरबी, बैरूत)

बेटे की मौत पर मुस्करहाट

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सिल्सिलए आलिया चिशितय्या के अझीम पेशवा 'हझरते सय्यिदुना **फुझैल बिन इयाझ** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ को किसी ने कभी मुस्कराते हुए नहीं देखा । जिस दिन आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के शहझादे हझरते सय्यिदुना **अली बिन फुझैल** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने जो के खुद भी विलायत के आ'ला मरतबे पर फाइझ थे ने वफात पाई तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ मुस्कराने लगे । लोगों ने अर्झ की, येह कौन सा खुशी का मौकअ है जो आप मुस्करा रहे हैं ! फरमाया, मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिझा पर राझी हो कर मुस्करा रहा हूं, क्यूं के अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिझा ही के सबब मेरे बेटे को कझा आई है । रब عَزَّوَجَلَّ की पसन्द अपनी पसन्द ।'

(मुलखखसन तझकिरतुल औलिया, जिल्द:1, स-फहा:86, इन्तिशाराते गंजीना, तेहरान)

जो सोहना मेरे दुख विच राझी
मैं सुख नूं चुल्लाहे पावा

क्या आप नेक बनना चाहते हैं ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! क्या आप वाकेई नेक बनना चाहते हैं ? तो फिर इस के लिये आप को थोडी बहोत कोशिश करनी पडेगी । **اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ** मैं ने अपने इस्लामी भाइयों के लिये 72 इस्लामी बहनों के लिये 63 म-दनी इन्आमात मुरत्तब किये हैं, जो आप को **मक्त-बतुल मदीना** से हदिय्यतन मिल सकते हैं । इन को ठन्डे दिल से पढिये । येह **म-दनी इन्आमात** सुवालात की सूरत में हैं, मेरी दुआ है के जो कोई इख्लास के साथ इन पर अमल करे परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ उस को जन्नतुल फिरदौस में अपने प्यारे महबूब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का पडौस अता फरमाए ।

أَمِينَ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

पहला म-दनी इन्आम

इन 72 म-दनी इन्आमात में इस्लामी भाइयों के लिये **पहला म-दनी इन्आम** येह है, 'क्या आप रोझाना पांचों नमाझें मस्जिद की पहली सफ में तक्बीरे ऊला के

साथ बा जमाअत अदा करते हैं ? मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सिर्फ इस एक म-दनी इन्आम पर अगर कोई सहीह मा'नों में कारबन्द हो जाए तो **إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** इस का बेडा पार हो जाए । नमाझ के फझाइल से कौन वाकिफ नहीं ?

तमाम सगीरा गुनाह मुआफ

सरकारे मदीनए मुनव्वरा, सुल्ताने मक्कए मुकर्रमा **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने फरमाया, जो दो रक्अत नमाझ पढे और इन में सहव (या'नी गलती) न करे तो जो पेशतर इस के गुनाह हुए हैं अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** मुआफ फरमा देता है । (यहां गुनाहे सगीरा मुराद हैं ।)

(मुस्नेदे इमाम अहमद, रकमुल हदीस:21749, जिल्द:8, स-फहा:162, दारुल फिक्क बैरूत)

जमाअत की फझीलत

देखा आप ने ! दो रक्अत की जब येह फझीलत है तो पांचों नमाझों की कैसी ब-र-कते होंगी ! इस 'म-दनी इन्आम' में नमाझें बा जमाअत अदा करनी हैं, 'और जमाअत की फझीलत के तो क्या केहने मुस्लिम शरीफ में सय्यिदुना अब्दुल्लाह इब्ने उमर **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا** से रिवायत है, ताजदारे मदीना, राहते कल्बो सीना **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने इर्शाद फरमाया, 'नमाजे बा जमाअत तन्हा पढने से 27 द-रजे बढ कर है ।'

(मुस्लिम शरीफ, जिल्द अब्वल, स-फहा नम्बर:231)

तक्बीरे ऊला की फझीलत

मझीद इस 'म-दनी इन्आम' में तक्बीरे ऊला का भी झिक्र है । इस की भी फझीलत सुनिये और झूमिये **इब्ने माजा** की रिवायत में है, सरकारे मदीनए मुनव्वरा, सरदारे मक्कए मुकर्रमा **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने इर्शाद फरमाया, 'जो मस्जिद में बा जमाअत 40 रातें नमाझें इशा इस तरह पढे के पहली रक्अत फौत न हो, अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** उस के लिये जहन्नम से आझादी लिख देता है । (इब्ने माजा रकमुल हदीस:798, जिल्द:1, स-फहा:407, तब्आ दारुल मा'रेफा, बैरूत) **سُبْحَانَ اللهِ** चालीस दिन जब इशा की नमाजे बा जमाअत मअ तक्बीरे ऊला अदा करने की येह फझीलत है तो झिन्दा रह जाने की सूरत में बरस हा बरस तक पांचों नमाझें तक्बीरे ऊला के साथ बा जमाअत अदा करने का क्या मकाम होगा !

नमाझ में हज का सवाब

सरकारे मदीना राहते कल्बो सीना **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** का फरमाने खुशबूदार है, 'जो तहारत कर के अपने घर से फर्ज नमाझ के लिये निकला उस का सवाब ऐसा है जैसा हज करने वाले मुहरिम (एहराम बांधने वाले) का ।'

(अबू दावूद शरीफ, रकमुल हदीस:558, जिल्द:1, स-फहा:231, तब्आ दारे एह्याउत्तुरासुल अरबी, बैरूत)

दिन में पांच मरतबा गुस्ल की मिसाल

हझरते सय्यिदुना अबू हरैरा **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** से रिवायत है, सरकारे मदीना, राहते कल्बो सीना, फैझे गंजीना, साहिबे मुअत्तर पसीना, बाइसे नुझूले सकीना **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का फरमाने बा करीना है, 'बताओ अगर किसी के दरवाझे पर एक नहर हो जिस में वोह हर रोझ 5 बार गुस्ल करे तो क्या उस पर कुछ मैल रह जाएगा ?' लोगों ने अर्झ की, 'इस के मैल में से कुछ बाकी न रहेगा ।' आप **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने फरमाया, 'पांचों नमाझों की ऐसी ही मिसाल है अल्लाह तआला इन के सबब खताओं को मिटा देता है ।'

(मुस्लिम शरीफ, जिल्द:1, स-फहा:235, तब्आ अफगानिस्तान)

जन्नती झियाफत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस 'म-दनी इन्आम' की रू से नमाझें भी मस्जिद ही में अदा करनी हैं और मस्जिद को जाना **سُبْحَانَ اللهِ !** हझरते सय्यिदुना अबू हरैरा **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** से रिवायत है, सरकारे मदीना, राहते कल्बो सीना **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने इर्शाद फरमाया, 'जो सुबह या शाम को मस्जिद में आए, अल्लाह तआला उस के लिये जन्नत में एक झियाफत तैयार फरमाएगा ।'

(सहीह मुस्लिम, जिल्द:1, स-फहा:235, तब्आ अफगानिस्तान)

पहली सफ

पहली सफ भी इस “म-दनी इन्आमात” में मौजूद है। सरकारे मक्कतुल मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ फरमाते हैं, “लोग अगर जानतेके **अज्ञान** और **पहली सफ** में क्या है तो बिगैर कुर्आ डाले न पाते लिहाजा इस के लिये कुर्आ अन्दाज़ी करते।” (सहीह मुस्लिम, जिल्द:1, स-फहा:172, तब्आ अफगानिस्तान) एक और रिवायत में है, रहमते आलम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फरमाने रहमत निशान है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के फिरिश्ते **पहली सफ** पर दुरूद (या'नी रहमत) भेजते हैं, सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अर्ज़ की, और दूसरी² सफ पर ? फरमाया, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के फिरिश्ते दुरूद भजते हैं **पहली सफ** पर, सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने फिर अर्ज़ की, या रसूलल्लाह ! عَزَّوَجَلَّ और दूसरी² पर भी ? फरमाया, “दूसरी²” पर भी। मज़ीद इर्शाद फरमाया, सफों को बराबर करो और कन्धों को मुकाबिल (या'नी एक सीध में) करो अपने भाइयों के हाथों में नर्म हो जाओ और कुशादगियों (या'नी सफ की खाली जगहों) को बन्द करो के शैतान भेड के बच्चे की तरह तुम्हारे बीच में दाखिल हो जाता है।

(मुस्नदे इमाम अहमद, रकमुल हदीस:22326, जिल्द:8, स-फहा:296, तब्आ दारुल फिक्र बैरूत)

कौन सा अमल झियादा अफज़ल ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हो सकता है आप में से किसी को मेरे 'म-दनी इन्आमात' मुश्किल मा'लूम हों मगर हिम्मत न हारें। हदीसे पाक में है, **أَفْضَلُ الْعِبَادَةِ أَحْمَرُهَا** या'नी “अफज़लतरीन इबादत वोह है जिस मे ज़हमत ज़ियादा हो। हज़रते सय्यिदुना” इबाहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم फरमाते हैं, “दुन्या में जो अमल जितना दुश्वार होगा बरोझे कियामत मीज़ाने अमल में वोह उतना ही झियादा वज़न दार होगा।” (तझकिरतुल औलिया, जिल्द:1, स-फहा:95, इन्तिशारते गंजीना, तेहरान) जब आप अमल शुरू कर देंगे तो वोह आप के लिये आसान हो जाएगा। गालिबन आप को तजरिबा होगा के सख्त सदीर् के वक्त वुझू के लिये बैठते हैं तो शुरू में सदीर् से दांत बजते हैं फिर हिम्मत कर के जब वुझू शुरू कर देते हैं तो **इब्तिदाअन** टंडक झियादा महसूस होती है और फिर ब तदरीज कम हो जाती है। हर मुश्किल काम का येही उसूल है। म-सलन किस को कोई **मोहलिक बीमारी** लग जाए तो वोह बे चैन हो जाता है फिर रफ़ता रफ़ता जब आदी हो जाता है तो कुव्वते बरदाश्त भी पैदा हो जाती है। एक इस्लामी भाई **इर्कुन्सिमा** के म-रज़ में मुब्तला हो गए येह म-रज़ उमूमन पांव के टख्ने से ले कर रान के ऊपर के जोड तक होता है और महीनों और बा'झों को बरसों तक नहीं जाता। वोह तश्वीश में पड गए थे। मैं ने अर्ज़ किया, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बेहतर करेगा। घबराएं नहीं जब आप आदी हो जाएंगे तो إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ बरदाश्त करना आसान हो जाएगा। कुछ अरसे के बा'द मिले तो मेरे इस्तिफ़सार पर बताया के दर्द तो वोही है मगर आप के केहने के मुताबिक मैं आदी हो चुका हूं। इस लिये काम चल जाता है। م-الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ म-दनी इन्आमात तो हमें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फरमांबरदार बनाने और हमारी दुन्या व आखिरत की बेहतरी के लिये हैं। यकीनन शैतान आप को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के काम करने में रुकावट पर रुकावट खडी करेगा। आप हिम्मत मत हारियेगा शैतान व नफ़्स को चाहे कितना ही ना गवार गुज़रे आप को इन 'म-दनी इन्आमात' पर अमल करना ही चाहिये।

सरवरे दीं ! लीजे अपने ना तूवानों की खबर नफ़सो शैतां सय्यिदा कब दक तबाते जाएंगे म-दनी काम बढाने का नुस्खा

अगर दा'वते इस्लामी के झिम्मादारान खुसूसी तवज्जोह फरमा कर इस म-दनी काम का बीडा उठा लेंगे तो إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ हर तरफ सन्नतों और अच्छे अमलों की बहार आ जाएगी। अगर आप सब ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा की खातिर **बसमीमे** कल्ब इन **म-दनी इन्आमात** को कबूल फरमा कर इस पर अमल करना शुरू कर दिया तो إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ जीते जी और वोह भी जल्द ही इस की ब-र-कतें देख लेंगे, आप को إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ सुकूने कल्ब नसीब होगा, बातिन की सफाई होगी। खौफे खुदा व इश्के मुस्तफा عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के सोते (या'नी

चश्मे) आप के दिल से फूटेंगे। بِإِذْنِ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ आप के अलाके में **दा'वते इस्लामी** का म-दनी काम हैरत अंगेझ हद तक बढ जाएगा। चूँके "म-दनी इन्आमात" पर अमल अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के हुसूल का झरीआ है। लिहाज़ा शैतान आप को बहोत सुस्ती दिलाएगा। तरह तरह के हीले बहाने सुझाएगा, आप का दिल नहीं लग पाएगा, मगर आप हिम्मत मत हारियेगा। بِإِذْنِ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ दिल भी लग ही जाएगा।

**ऐ रिज़ा हर काम का इक वक्त है
दिल को भी आराम हो ही जाएगा
अमल करने वालों की तीन अक्साम**

कीमियाए सआदत में हुज्जतुल इस्लाम इमाम मुहम्मदगज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي फरमाते हैं, 'हज़रते सय्यिदुना अबू उस्मान मगरिबी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ से उन के मुरीद ने अर्ज़ की, या सय्यिदी ! कभी कभी ऐसा होता है के दिल की रग़बत के बिगैर भी मेरी झबान से झिक्रुल्लाह عَزَّوَجَلَّ जारी रहता है। उन्हीं ने फरमाया, 'येह भी तो मकामे शुक्र है के तुम्हारे एक उड़व (या'नी झबान) को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपने झिक्र की तौफीक बख़्शी है।' जिस का दिल झिक्रुल्लाह عَزَّوَجَلَّ में नहीं लगता उस को बा'झ अवकात शैतान वस्वसा डालता है के जब तेरा दिल झिक्रुल्लाह عَزَّوَجَلَّ में नहीं लगता तो खामोश हो जा के ऐसा झिक्र करना बे अदबी है। इमाम मुहम्मद गज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي फरमाते हैं, 'इस वस्वसे का जवाब देने वाले तीन किस्म के लोग हैं। **एक किस्म** इन लोगों की है जो ऐसे मौकअ पर शैतान से केहते हैं, 'खूब तवज्जोह दिलाई अब मैं तुझे झिच (या'नी बेझार) करने के लिये दिल को भी हाज़िर करता हूँ' इस तरह शैतान के झख्मों पर नमक पाशी हो जाती है। दूसरे वोह अहमक हैं जो शैतान से केहते हैं, 'तू ने ठीक कहा जब दिल ही हाज़िर नहीं तो झबान हिलाए जाने से क्या फाइदा !' और वोह झिक्रुल्लाह عَزَّوَجَلَّ से खामोश हो जाते हैं। येह नादान समझते हैं के हम ने अक्लमन्दी का काम किया, हालांके उन्हींने शैतान को अपना हमदर्द समझ कर धोका खा लिया है। **तीसरे** वोह लोग हैं जो केहते हैं अगचेर् हम दिल को हाज़िर नहीं कर सके मगर फिर भी झबान को झिक्रुल्लाह عَزَّوَجَلَّ में मरूफ रखना खामोश रहने से बेहतर है, अगचेर् दिल लगा कर झिक्रुल्लाह عَزَّوَجَلَّ करना इस तरह के झिक्रुल्लाह عَزَّوَجَلَّ से कहीं बेहतर है।

(कीमियाए सआदत, जिल्द:2, स-फहा:771, इन्तिशारते गंजीना, तेहरान)

तौबा की फज़ीलत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आपने ! दिल न लगे तब भी अमल को जारी रखना ही हमारे लिये बेहतर है। बहर हाल **नेक बनने का नुस्खा** हाज़िर किया है, इस के मुताबिक अमल करते जाइये। कभी न कभी तो بِإِذْنِ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ मन्ज़िल पा ही लेंगे। एक म-दनी इन्आम में रोझाना दो² रक़अत नमाझे तौबा अदा कर के अपने गुनाहों से तौबा करने कीतरगीब दिलाई गई है। तौबा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को राझी करने और नेक बनने का बेहतरीन म-दनी नुस्खा है। जब कभी गुनाह सरझद हो जाए उसी वक्त तौबा कर लेनी चाहिये। तौबा की एक फज़ीलत सुनिये और झूमिये ! रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फरमाने मुअझ्ज़म है :- **النَّاسُ مِنَ الذَّنْبِ كَمَنْ لَا ذَنْبَ لَهُ** या'नी गुनाहों से तौबा करने वाला ऐसा है गोया उस ने गुनाह किया ही नहीं है।

(इब्ने माजा, रकमुल हदीस:4250, जिल्द:4, स-फहा:491, तब्आ दारुल मा'रेफा, बैरूत)

नेक बनने के लिये दा'वते इस्लामी के **म-दनी माहौल** से हरदम वाबस्ता रहिये, दा'वते इस्लामी के हफ़तावार **सन्नतों** भरे **इजतिमाअ** में अक्वल ता आखिर शिर्कत फरमाइये, हर इस्लामी भाई को चाहिये के झिन्दगी में कम अझ कम 12 माह और हर 12 माह में एक मुश्त कम अझ कम 30 दिन नीझ हर 30 दिन में कम अझ कम 3 दिन सन्नतों की तरबियत के लिये आशिकाने रसूल के साथ दा'वते इस्लामी के **म-दनी काफिले** में झरूर सफर करे।